Dr Tapali Mukherjee.
Associate Prof
Date - 04-07-2020
H.O.D in Music
Rohtas Mahila College
Sasaram

Study Material for B.A Part II (Hons) Pract + Theory
Subject. Music Paper III (Hons)
Topic - Raga Parichay - Kamod

राग कामोद का पूर्ण परिचय

"राग कामोद थाट कल्याण
दोनो मध्यम सोहत
पर स्वर सम्वाद करत जब,
प्रथम प्रहर मन मोहत"

राग कामोद की उत्पत्ति कल्याण थाट से माना गया है, इस राग मे दोनो मध्यम (म) के अतिरिक्त सभी स्वर शुद्ध प्रयोग होता है। इस राग की जाति वक्र सम्पूर्ण है। वादी स्वर पंचम तथा सम्वादी स्वर रिषभ है। इस राग का गायन समय रात्रि का प्रथम प्रहर है। इस राग की वादी स्वर के विषय मे कहा जाता है की यह राग नियमो की अपवाद है।

विशेषता :- ① इस राग मे रिषभ तथा पंचम स्वर की संगती मधुर प्रतीत होता है जैसे- रिषभ स्वर से पंचम स्वर की ओर जाते समय मध्यम स्वर से रिषभ स्वर की ओर उतरते हुए मींड़ युक्त झटके के साथ पंचम स्वर की ओर चढ़ते है, सा-म रे ऽ प ऽ।

② इस राग की मधुरता वृद्धि करने के लिए केदार राग के समान कभी-कभी कोमल निषाद स्वर का प्रयोग कभी-कभी अवरोह मे किया जाता है। जैसे - सां ध नि प। इस राग मे शुद्ध निषाद का अल्प प्रयोग होता है,

③ तीव्र मध्यम स्वर का प्रयोग केवल आरोह मे पंचम स्वर के साथ तथा शुद्ध मध्यम स्वर का प्रयोग आरोह-अवरोह दोनो मे होता है,

④ गांधार स्वर का प्रयोग वक्र रूप मे होता है, कभी-कभी गांधार स्वर को छोड़कर उसके की ओर चढ़ते है जैसे -

Scanned with CamScanner

सा - मरे प।

न्यास स्वर - "सा"(षड्ज) "रे"(रिषभ) प(पंचम)

सम-प्रकृति राग - हमीर - केदार।

आलाप -

सा ऽ - - - ; सा मरे प ; धऽ पऽ ग म रेऽ सा।

नि ऽऽ धऽऽ पऽऽ साऽऽ रेऽऽ सा, मरे पऽऽ धऽ प।

ग म प, ग म रे ऽ सा। सां म रे ऽ प, मं प धऽ पऽ

मं ध प, नि ध प, ग म ध प ग म रे सा।

Scanned with CamScanner